ISSN NO: 0776-3808

नारी शोषण के सन्दर्भ में शंकर शेष का नाटक कोमल गांधार

समाज अचेतन तथा विलग प्राणियों का संगठन मात्र नही है। उसमें सुख- दुःखात्मक सह-अस्तित्त्व की अंतः धारा का अजस्र स्रोत प्रवाहित होता रहता है। जब तक नर-नारी इस धारा के साथ समानता के स्तर पर नहीं जुडते तब तक नर-नारी एक असह्य विलगता के भाव से आक्रांत रहते हैं । इस अंतः धारा के साथ जुडने पर ही नर-नारी समाज में प्रतिष्ठित हो पाते हैं । यदि हम मानवीयता व समानता को अपना जीवनधारा बनाए तो सामूहिक संघर्ष द्वारा सकारात्मक सामाजिक सुधार लाए जा सकते हैं । समानता व मानवीया के विरोध में जब पुरुष स्त्री पर अधिकार का प्रयोग करता है तब स्वाभाविक रूप से नारी का शोषण का प्रारंभ होता है **विषमता शोषण का मूल स्रोत है।**

समानता, स्वतंत्रता व सांघिक जीवन पर ही वेदकालीन नारी नवीन व भव्य वातावरण की निर्मात्री बनी थी । नारी शोषण से मुक्त थी । समाज में सभी को समानता का समरसता का जीवनयापन का अधिकार मिला था क्यों कि सामाजिक समानता तथा व्यक्तिगत स्वतंत्रता ही वास्तविक सुखी व समृद्ध जीवन का आधार स्तंभ हैं ।

नारी समानता व स्वतंत्रता का आधार की सृष्टि करती है। अतः वैदिक मर्हषि का वाक्य है –

"हंसा एव श्रेणिषो यतन्ते"

हंस के समान शुभ्र एवं सांधिक जीवनयापन करें ।

1) ज्ञान मूलं वेदम्
2) स्त्री मूलं शीलं,
3) जगत मूलं धनम्

ज्ञान का मूल वेद, शील–चारित्र का मूल स्त्री जगत् कार्य का गूल धन है। उपरोक्त सूक्तियाँ स्वस्थ व शोषण मुक्त समाज का दर्पण है।

महर्षि – उषा सूक्त में – व्यक्त करता है

"उषा अदर्शि रश्मिभिर्व्यक्ता चित्रामघा विश्वमनु प्रभूता"

किरणो से अभिव्यक्त होकर उषा सम्पूर्ण विश्व को व्याप्त करके दिखालाई पड रही है।

उपरोक्त सूक्त द्वारा वेदर्षी उषा को सर्वव्यापक बनाकर इन्द्र, अग्नी, वरुण, मित्र एवं सविता के समक्ष में विराजमान किया है। यही समानता है।

न गायत्र्याः परों मंत्रों
न मातुः परं (श्रेष्ठ) दैवम् ।।

गायत्री मंत्र से श्रेष्ठ मंत्र नहीं माता से श्रेष्ठ दैव नहीं ।

इसके उपरान्त आया –

स्मृति काल, नारी शोषण के अरुणोदय काल था –

ISSN NO: 0776-3808

"यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमन्ते तत्र देवता"

जहाँ नारी की पूजा है वहाँ देवताओं का वास होता हैं ।

यहाँ नारी को समानता से ऊपर उठाया गया हे। यहाँ से समानता का अभाव दिखने लगा नारी समान नहीं उन्नत है। इस मानसिक द्वंद्व ने निम्न सूक्त को जन्म दिया।

पिता रक्षति कौमर्ये
पति रक्षति यौवने
सुतो रक्षति वृद्धाप्ये
न स्त्री – स्वातंत्रम् अर्हती ।।

बाल्यावस्था में पिता, यौवन में पति बुढापे में पुत्र स्त्री का संरक्षण करते हैं अतः स्त्री स्वतंत्रा के लिए योग्य नहीं ।

पुरुषस्य भाग्यं स्त्रीयश्चरित्रम्
देवो न जानाति कुतः मानवः ।

पुरुष का भाग्य स्त्री का चरित्र देवता भी नहीं जानते तो मानव से कैसा संभव है।

जहाँ वेदमें मानवीय जीवन के अत्यंत महत्त्वपूर्ण मूल्य–ज्ञान शील, करुणा, प्रज्ञा, विद्रोह, व धन प्राप्ति में नर–नारी समानता के धरातल पर उपस्थित थे उस स्थान से नारी च्युत होकर स्मृति पुराण में तथा मध्य युगीन काल में जिसमें विषमता, भ्रष्टाचार असमानता, तनाव, दारिद्रता, निरुद्योग, अशिक्षा अज्ञान व

अराजकता आदि अनंत समस्याएँ भारतीय समाज में विद्यामान थे वहाँ नर–नारी विषमता से ग्रस्त हो गये । अतः संतश्रेष्ट –तुलसीदास स्त्री विषय में लिखते हैं– ''भ्राता पिता मुत्र उरगारी, पुरुष मनोहर निरखत नारी, होई बिकल सक मनहिं न रोकी जिमि रविमनि द्रब रबिहिं बिलोकी'' तथा ''ढोल गंवार शुद्र पशु नारी सकल ताडना के अधिकारी'' इन उपरोक्त श्लोको में संत तुलसी द्वारा मध्ययुगीन नारी शोषण का अत्यंत स्पष्ट सरल चित्रण हमें प्राप्त होता है। उस युग में सामाजिक, आर्थिक व सांस्कुतिक धरातल पर स्त्री केवल उपभोग की वस्तु बनकर रह गयी।

वह ''काम के केवल नारी'' कामदेव का बल केवल स्त्री ही है। इतना ही नहीं – नारी– ''अति दारुन दुःखद माया रुपी नारी'' अत्यंत कठिन दुख देनेवाली माया रुपिणी नारी है। इससे अधिक शोषण नारी का कहीं भी नहीं हुआ है।

नारी शोषण का सुंदर चित्रण संत तुलसीकृत ''रामचरित मानास'' मे मिलता है।

अतः शंकर शेष–पुराण व मध्ययुगिन नारी पात्रों में सुखदुखात्मक सह–अस्तित्व व विघटन की अंतः धारा का अजस्र स्रोत को गंभीरता से अध्ययन किया । शंकर शेष की सजग चेतना सभी प्रकार के प्रभावों को, घटनाओं को एवं स्थितियों को गंभिरता से ग्रहण करति है। अतः उन्होने अपना नाटक ''कोमल गांधार'' में समकालीन मनुष्य की जीवनगात समस्याओं, उसकी

शोषण गाथा, संघर्ष चेतना विघटित हो रहे जीवन–मूल्यों को ''कोमल गांधार'' में प्रमुख विषय बनाया है। दूसरी ओर सामाजिक दायित्वों का निर्वाह करते हुए मानवता को नए मूल्य और प्रतिमान प्रदान करने का प्रयास भी किया है।

वर्तमान समय में पुरुष द्वारा शोषित नारी का नित्य–निरंतर यातना का प्रबल चित्रण कोमल गांधार में किया गया है।

शंकरशेष ने ''कोमल गांधार'' में गांधारी के जीवन–संघर्ष के माध्यम से नारी पर होनेवाली पुरुष वर्ग के अत्याचार को सहज लेकिन प्रभावपूर्ण पध्दति से अभिव्यक्त किया है। साथ ही नारी जीवन के कोमल – गांधार को छीननेवाली पुरुष वर्चस्ववादी व्यवस्था को बदलने की जरुरत बताते हुए विवाह जैसे संवेदनात्मक सवालों का स्वार्थी जवाब ढूंढने की मनोवृत्ति को भी बेनकाब किया है। गांधारी–धृतराष्ट्र से छल–कपट से विवाह करने के पीछे सक्रिय भीष्म के विश्वासघात को वह पहचानती है और इस अन्याय का विरोध करती है–

गांधारी – ''इस परम्परा को तोड ही सकती हूँ दासी। उन्हे अनुभव करा सकती हूँ कि स्त्री पर अन्याय करने का नैसर्गिक अधिकार इन्हे प्राप्त नहीं है। इन सबको अपना अपराध की आग में जला ही सकती हूँ।''

ISSN NO: 0776-3808

पट्टी बांधने में गांधारी का स्त्री को पुरुष की दासी समझने की परम्परा का विरोध और कुरुवंशीयों से टकराहट निहित है। धृतराष्ट्र और गांधारी के स्तर पर दोनों के अहम् कारण भी इसमे देखे जा सकते हैं । गांधारी : याद है दुर्योधन पैदा हुआ, उसे देखने आए थे । आप सोचती थी कि आप मुझसे पट्टी हटाने के लिए कहेंगे। क्यों नहीं कहा आपने''।

धृतराष्ट्र : उस समय मेरा मन भी हाँ नहीं के झंझावन में फंसा था गांधारी, लेकिन मेरा अहं आडे आया । मन ने कहा – भोगने दो इस हठधर्मी को यह व्याथा ।

गांधारी – हमारी शोकांतिक सही में कही दोनों का अहं तो नहीं था महाराज ।

धृतराष्ट्र –संभव है।

यहाँ गांधारी अपना शोषण के विरोध जतलाने में सफल होती है।'' कोमल गांधार की गांधारी का संघर्ष इस सन्दर्भ में अर्थवान है कि वह एक जड वस्तु–सी अन्याय को बर्दाश्त नहीं करती । नारी को खरीदने और लूट के वस्तु की तरह लाई जाने की कुरुवंश की परम्परा का वह अपने ढंग से विरोध करती हैं पति–पत्नी के बीच का सम्बन्ध अहं से विकृत होता है, इस स्त्य को धृतराष्ट्र और गांधारी बहुत देर से जानते हैं ।

ISSN NO: 0776-3808

गांधारी का विवाह छल-कपट के साथ किया जाता है। जिसका प्रतिशोध वह आंखो पर पट्टी बांधकर करती है, उसे लगता है कि दुनिया चाहे महासतीत्व का बिरुध दे, परन्तु वह तो कुरुवंश पर अपना शोषण के विरुद्ध बदला निकाल रही थी । इस बात को दासी जानती थी जैसे दासी-तो अपना जहर तुम इससे भी फैलाओगी । तुम्हारी प्रतिज्ञा में यह अबोध तो शामिल नहीं है । बहुत हो गयी प्रतिज्ञा-व्रतिज्ञा... खोले पट्टी और देखो इसे । इस प्रकार नारी के शोषण का विरोध का चित्रण बहुत हद तक सजगता से डा.शंकर शेष कोमल गांधार में चित्रित करने में सफल हुए हैं । अस्तु

प्रस्तुत कर्ता-नागप्पा अप्पण्णा सिंगी
R-16, PH No. 3
रेवा विश्व विद्यालय

शोध निदेशक : डॉ. श्रीनिवासमूर्ति
M.A. Ph.D
हिंदी विभागाध्यक्ष
रेवा विश्व विद्यालय, बेंगलूर